NOTIFICATION NO: 577/2025

NOTIFICATION DATE : 7/04/2025

NAME OF SCHOLAR- ANITA KUMARI

NAME OF SUPERVISOR- Prof. DILEEP KUMAR SHAKYA

NAME OF DEPARTMENT – DEPARTMENT OF HINDI

TOPIC OF RESEARCH- HINDI KATHA SAHITYA MEIN CHITRIT KINNAR SAMUDAY KA SAMAJSHASTRIYA ADHAYAYAN

निष्कर्ष

इस शोध में हिंदी साहित्य में चित्रित किन्नर समुदाय के जीवन पर व्यापक एवं विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें ना केवल इस समुदाय की ऐतिहासिक उपस्थिति की चर्चा की गई है बल्कि वर्त्तमान में इस समुदाय के जीवन परिस्थितियों और भविष्य की संभावनाओं पर भी बात की गई है।

इस शोध में ' किन्नर' शब्द के अर्थ एवं अभिप्राय की व्याख्या करते हुए केवल ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक साक्ष्यों का सहारा नहीं लिया गया है बल्कि वैज्ञानिक दृष्टि के अंतर्गत भी इस शब्द को समझा गया है। जैसे की विज्ञान में बताया गया है कि मानव में गुणसूत्रों के असंतुलन के कारण 'लैंगिक विकलांग'बच्चे का जन्म होता है, मानव शरीर का गुणसूत्र और शारीरिक संरचना पुरुष और महिला के अतिरिक्त उस 'अन्य लिंग' में भी बंटा होता है जिसकी शारीरिक संरचना में लैंगिक पहचान स्पष्ट नहीं होते। इस लैंगिक अस्पष्टता के कारण उन्हें इंटरसेक्स, थर्ड जेंडर या हिंदी में किन्नर एवं अन्य नामों से जाना जाता है। इनमें सम्पूर्ण रूप से न तो स्त्री और न ही पुरुष के गुणसूत्र होते हैं लेकिन यह कमी केवल यौनिकता तक ही सीमित होती है। इसका उस व्यक्ति के व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता न ही वह व्यक्ति किसी भी स्तर पर एक सामान्य व्यक्ति से अक्षम अथवा कमतर होता है। इस शोध में भारतीय समाज में किन्नर समुदाय से जुड़े मिथकों एवं आख्यानों में भी किन्नर समुदाय की उपस्थिति पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध में दक्षिण एशियाई देशों के समाज में किन्नर समुदाय की स्थिति का अध्ययन करते हुए यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि वे सभी देश जो लम्बे समय तक उपनिवेश रहे थे, उन सभी देशों में किन्नर समुदाय के जीवन और स्थिति में लगातार गिरावट आयी। इन सभी देशों के अतीत पर ध्यान दिया गया तो यह तथ्य प्राप्त हुआ कि अतीत में किन्नर समुदाय की स्थिति वर्तमान की तुलना में अच्छी थी और इन देशों के पौराणिक ग्रंथों में 'किन्नर समुदाय' को सम्मानजनक स्थान प्राप्त था। लेकिन इन देशों में साम्राज्यवादी ताकतों का वर्चस्व स्थापित होते ही यह समुदाय शंका के घेरे में आ गया। भारत में औपनिवेशिक कानून 'क्रिमिनल ट्राइब्स एक्ट' का इस समुदाय की सामाजिक स्थिति खराब करने में उल्लेखनीय योगदान रहा। 'भारत', 'पाकिस्तान' और 'बांग्लादेश' ये तीनों ही देश एक ही जमीन के तीन टुकड़े हैं अत: इन तीनों का साझा इतिहास है। ऐतिहासिक स्तर पर इस समुदाय

की स्थिति तीनों देशों में एक ही तरह की देखने को मिलती है। साथ ही भूटान और नेपाल ऐसे देश हैं जो काफी कम समय के लिए उपनिवेश रहें , इनके यहाँ किन्नर समुदाय की स्थिति अन्य दक्षिण एशियाई देशों की तुलना में अच्छी कही जा सकती है। इन देशों की सरकारें लगातार इस समुदाय के कल्याण और प्रगति के लिए नीतिगत प्रयास कर रही हैं और नागरिक भी सरकार पर लगातार दबाव बनाए हुए हैं। भूटान और नेपाल में इस समुदाय के कल्याण के लिए निजी स्तर बहुत काम किया जा रहा है।

इसी अध्याय से जो दूसरा तथ्य प्राप्त हुआ है, वह यह है कि किन्नर समुदाय की सामाजिक स्थिति में धर्म का बहुत हस्तक्षेप रहा है जो देश धार्मिक स्तर पर जितना उदार है वहां किन्नर समुदाय की स्थिति उतनी बेहतर है तथा समाज में एक सीमा तक इनके पहचान को स्वीकृत किया गया है लेकिन जो देश अपने धार्मिक विचारों को लेकर जितना उग्र है वहां स्थिति उतनी ही बदतर है। देश में धार्मिक हस्तक्षेप और किन्नर समुदाय की स्थित के बीच समानुपातिक संबंध है। तीसरा तथ्य यह है कि बौद्ध धर्म मे तीन शाखाओं यथा, वज्रयान, हीनयान और महायान में तीनों की तुलना करने पर वज्रयान में इस समुदाय की स्थिति ज्यादा खराब देखने को मिलती है, बाकी शाखाओं में इस समुदाय के मानवाधिकार का ख्याल रखा गया है। भूटान और नेपाल दो ऐसे दक्षिण एशियाई देश हैं जहाँ इस समुदाय की स्थिति अच्छी है लेकिन साहित्य तक अभी भी इनकी पहुंच दुर्लभ है।

भारत में विभिन्न भाषाओं की बात करें तो देखते हैं कि मराठी में किन्नर विमर्श की स्थिति अच्छी है और यहाँ यह समुदाय अपने अधिकारों को लेकर यहाँ ज्यादा मुखर है। तमाम एनजीओ इस समुदाय के अधिकारों की लड़ाई लड़ रहें हैं, जिनमें 'नाज फाउंडेशन' सबसे महत्वपूर्ण है। इसी संस्था की याचिका के परिणामस्वरूप वर्ष 2014 में माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने 'तृतीय लिंग' के तौर पर किन्नर समुदाय के पहचान को मान्यता दी तथा 'अन्य पिछडे. वर्ग' के अंतर्गत आरक्षण दिया गया। वर्ष 2018 के अपने ऐतिहासिक निर्णय के बाद, सरकार लागातार इस समुदाय के कल्याण हेतु नीतिगत प्रयास कर रही है।

किन्नर समुदाय की भाषा तथाकथित मुख्य समाज से बहुत अलग होता है, इस समुदाय के अपने कुछ रीति-रिवाज है जिसे वे आमलोगों से छुपाकर ही रखना चाहते हैं। अत: अपने जीवन की रहस्यात्मकता को अपने समुदाय तक सीमित करने के लिए एक अलग तरह की भाषा और शब्दों का चुनाव करते हैं। इनके भाषा का भी अध्ययन इस शोध में किया गया है।